

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN  
SURAT.

Manuscripts Library

~~Bala~~ S.A.P.B.

Coll. No. 218

Title Bālahasaneanāma १०



CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

*Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara*

No.: 218 Subject: Tantra

Title: Bala-sarasa Nama Stotra

Author: — Scribe: —

Date of the work: — Date of the Ms.: —

Place of the work: — Place of the Ms.: —

Size: 7.3" x 3.4" Extent: 10 fol. No 425

Language: Sanskrit Script: Devanagari

Remarks: incomplete. Fol. no 425 missing



निशाचनमः अथ रुद्रमामलेनमामहे रुद्रं वायुं देवायः शस्त्रं गणेशं  
नमाधु परतं कांतमेकदा विजनेमुदा। परमा नंदं शंदो हृदि तं प्राहमावति। श्रीमत् २  
यत वा नंदकारणं ब्रूहि शंकर। कोने द्रोपास्य देवेश प्रेममूर्ति सुधानिधे। राक्षसा  
मदिने तं जे सुगोप्यमधिकथतां। आशां कुरुते वीर। निजरा नंदसंदोहः क्विनावे  
न जायेता। लावण्यसिधुस्तत्रापि नो। आयां परकंदरा। नामेवानुत्तरां देवि विजया  
विजयं विजयी। ४। तस्या नाम सहस्रं कथयामितव प्रिये। सुगोप्या न्यपि रंजो रुगं नीर  
तेन विजयमाहापातामेव कुरुते देवि ध्यायतो। नुरु रंजं म। सुखसंदोहसंजा बोला मान  
रंजकारणं। दुःखस्य श्रीमहा बा लापुत्रि शयाः सहस्रनाम जे तस्या न गवान् शंकर कुरु  
रनुपुं जे म गवती श्री बा ला त्रिपुरा देवता कुमुदना जे तस्य सप्तपुत्रा अपि सुमन  
सा मध्ये विनिवेश। ॥ १॥ आ नंदसिं सुरा नंद नंदमूर्ति विजो दिनी। त्रिपुरा सुंदरी प्रिय  
पुत्रा विजिरनुमपः। ॥ २॥ नंदरा नृति विनूति शंकरे ना। आष्टं गारु मूर्ति वर्दरा  
उमुभनं नंदरा। ॥ ३॥ नंदरा नृति विनूति शंकरे ना। आष्टं गारु मूर्ति वर्दरा  
तामहावरा। ॥ ४॥ नंदरा नृति विनूति शंकरे ना। आष्टं गारु मूर्ति वर्दरा



रमकलः कला नता  
 र्ककोटि किरण वंदकोटि  
 नयनां न ता सुखति सुख संतति ॥ १ ॥ दिग्गंग  
 जश्वरी रा मरिच परि वंदिता ॥ वय वगति ॥ २ ॥ नात्र पं व  
 हाहा ॥ ३ ॥ न क न क पुरा ॥ नम र व लो जा सु रि ॥ ४ ॥  
 नम व ॥ ५ ॥ ता नि इ य वि रा जि ता वं द ॥ ६ ॥ वा न ना वा न मु कुर ॥ ७ ॥  
 वा न धा ॥ ८ ॥ म ल मा ल का ॥ मं दार ना म मु दि ता र त्ति मा ॥ ९ ॥  
 प्रां ता मु ल ॥ दा ता दा म म न ॥ ता नू ला पू र्ण वि द न ॥ १० ॥  
 व सा श ॥ ह पा ना रा बि धा श्वरी ॥ व ह स्व ल क म ॥ ११ ॥  
 को बार ॥ १२ ॥ नू य नौ कू पि ली ॥ क म नी या ॥ १३ ॥  
 म र्ण हा पि ठ ॥ ने वा सि नी ॥ रा ज ल स्त्री ॥ श्रि मा ल स्त्री म हा ल स्त्री सु रा जि ता ॥ १४ ॥  
 ता नं प ॥ १५ ॥ ८ ॥ ता त कं न श्रि या रु ति ॥ परि हृ त जि ग द ॥ १६ ॥  
 १७ ॥ १८ ॥ सा मा ज्य गे ति रे बि का ॥ स रो न लो री र्ध ॥ १९ ॥  
 २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

वंती र सिका प्रधा न र स कू पि ली ॥ र स सिं धु ॥ शु गा त्री व धू सरी मे धु के न्द्र मा ॥ ३१ ॥ नि रं त र र  
 ला शा क्ति नि धु व ना मि का ॥ का मा हा क म नी या व का मे शी भ ग म ग ला ॥ ३२ ॥ सु भ ग ना ना  
 ना ग्य दा न ग दा न गा ॥ न ग लिं ग म द क ल ॥ न ग म ध नि वा सि नी ॥ ३३ ॥ न ग कू पा भ ग म य नि ग  
 यं ना न गे न मा ॥ यो नि कू या का म क ला कु ला म त प रा य णा ॥ ३४ ॥ कु ल कुं ड ल या मू ल जी व  
 लिं गा नू कू पि ली ॥ मू ल क्रि या मू ल कू पा मू ला वृ त्ति स्व कू पि ली ॥ ३५ ॥ सो म्या ॥ का म क ला न र  
 वि द्या शा म ग ति दि वा ॥ सि ता कू णा बिं डू कू पा वे र यो नि धी ति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥  
 रा वा र बिं डो लि ता ॥ ता ना दां त ली ना म कू णा प्रि ए वा व कू कू पि ली ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥  
 नि व दि त्रा मु र ज धू नि ॥ व ल मि ला सि दि क ला ष ट व कू क म वा सि नी ॥ ४६ ॥ मू ल के लि र ता स्त्र  
 धि षा नां त वि नि वा सि ती ॥ म णि म र क्ति ति ॥ जि धा कू र्म वि क र रा म णा ॥ ४७ ॥ अ ना ह त ग ति दी प  
 शि ख नां द म यी धू ति ॥ वि मु द्धा मु द्ध प्रं बु ध जी व नो ध कू ली र व त ॥ ४८ ॥ आ हा व कू ल क स्फ रा  
 म्बु र ती ति गु ण क्रि या ॥ वं डि का व ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥  
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥



लारकाएविविदिनो। सुरकाप्रियमोसिताशस्त्रकुंगलपाजया। ३५। प्रेयःश्रुतिश्रुप्रलेक  
 वकेशकलावती। प्रीतिःशिवाशिवप्रियाशां करोशां नीविभुः। ३६। स्वयं नृसुप्रियाश्रया  
 कीपाजनमाहका। स्वराभास्वाश्रयश्रेयःसाधिकाधिकाधिका। ३७। मंगलजनिनीमर  
 सवमंगलसंगतिः। नराजइवतीकल्यावतिर्दुःखिदुःखाना। ३८। कल्याणलतिकाकाम्याकु  
 कमकुमतिप्रलुव। कुदंगाहीहीरनेनीहीरामधुरमोमरा। ३९। वाहणीपानमुदितामदि  
 राहतिराश्रया। कादंबरीपानमविविपाशापशुनावनुद। ४०। मुदितामदिराणागीदरां शु  
 दोलितदीर्घदक। दैत्यकुजातलक्षिरवामनो। ४१। रघुधधुनिः। ४२। सुवासिनीपीनगात्रीपीन  
 शोणीमयोधरा। सुवासिकबरीदंतधुतिनिदिनौक्तिका। ४३। बिबाधरधुतिमुखाप्रवा  
 लोत्तमहाधितिः। तिलस्तुननासाग्रहममोक्तिककोरका। ४४। निःकलंकेकुडबदनावी  
 लेडुमुकुटेजना। नृसुखजननेत्रश्रीविस्मुरकएशिसुली। ४५। बालवदंतपोहनामणि  
 खं५॥ स्वयंकिरीटिनी। क्रोशोघचंपकायेनामालतीदामने। ४६। भेसमालिकातादंका म  
 लिकावनकुंडला। सुवासिविदुकारामाकंवाकलिमनोरमा। ४७। गंगातरंगहारोर्मिमत्त  
 दिलनिःस्वना। मृणालबिम्बकुंडपाशांकुशधनुशरा। ४८। केसुरकरकासनानाता  
 शिमनोरमा। ताम्रपंकपाणिश्रीतस्वरेतमभावती। ४९। किंबुल्लपकुमुक्तेसिरेज

५०। वती। मंदरदंडमुकुवारेमराजीमुजंगिका। ५१। गंजीरनानिस्त्रिवलीनंगु  
 लामधमा। रणकांवीगुणमेधापटुंशुकस्वनीरिका। ५२। मंदकुंडीनितं बाद्यागजकुंडो  
 युग्ममुकु। सुजानुर्मदनानंदमयजंघाहयाविता। ५३। गुदगुल्कावानुसिजमलिकुपुरमं  
 ता। ५४। दंडबाह्यांभोजानरवदंशबलिप्रजा। ५५। सुमोमप्रमदादरजहसीमनेनमंदगा  
 योजिधेयपददंडसौंदर्यमितशारिणी। ५६। आवण्यमिधुःशिहरतिलकोकुटिलाजकप  
 साधुसिद्धिबुद्धिबुद्धिबुद्धिदरकोदया। ५७। बालाकीकिरेणश्रीश्रीश्रीश्रीप्रेमकामधु  
 क। रघुगंजीरकरयापभावीरस्वसारमा। ५८। प्रमनामनवरदाधारदाहुनिनामपदा। नटा  
 जप्रियाविश्वानाद्यनर्तनर्तकी। ५९। विनयंभाविततंशवित्रविद्यागतिःश्रुता। विनकु  
 टात्रिकुटावपंकुटावपंकुमी। ६०। वलुकुटाशंनुविद्यामदुटाविस्तुजितामिजशामनव  
 राणमीश्वरीमिरुमंगला। ६१। कुरखोउशसेपनाबुरीयापरमाकला। बोउशाणानिबलावि  
 बिडुनादस्वकृपिणी। ६२। बलपतीतावर्णमाताशहृदयमयीसुखा। सुखमोक्षोत्तमा  
 नंदविप्रादबुराकाशदेवता। ६३। वैतन्यवलीकृतात्मकामेशीस्वप्रदस्वमास्वदुःखा  
 कोधकरीजाराजगराश्रया। ६४। स्वप्राप्तयासुखसिद्धितंशमुक्तिश्चमाधेवी। ६५।  
 कामगतीमानवीविनपादितो। ६६। शांकरनंदिविद्यावभास्वतीविधुमालिनीम



श्रीस्वर्गसंपत्तिदुर्वासिसेविताश्रुतिः। ६४। साधकेन्द्रगतिमाधीसुधासिद्धिद्वयः। ६५। पुरनम  
 रभत्पथ्याचत्वरदेवता। ६६। पुष्टिविधिहस्तश्रुतिविधिणापुंड्रकामधुक्। ६७। हिरण्यमाताग  
 तंविद्युत्तुहामायानिधुंधिनी। ६८। सर्वश्रीमतिनीमाहादत्तदोक्षितमाहकासाधकायः। ६९।  
 तामधकेद्रामनोरमा। ७०। यौवनोन्मादिनीतुंगाहंगुणोत्तिसमंपरा। ७१। परकोत्पल  
 रक्तमाल्यानुलेपनाद्वारक्तमाल्यमविःक्षिप्त्वातिरवडिन्धितिसुंदरी। ७२। शिरवंडीनत्यसत्  
 णसौरलेयीवसुंधरा। ७३। सुरनीकामधुक्कामाकमनीयासुतावगते। नंदिनीलक्षणवती  
 वसिष्ठाजयदेवता। ७४। गोलोकदेवीलोकश्रीगोलोकपरिपालिका। ७५। विद्वन्निदेवमाता  
 दारकवराधुक्। ७६। रुद्रमातासुद्रमासुधादारात्रवाकति। ७७। हिरण्यपलसपुष्टि  
 कलाधरनंदिनी। ७८। रघुर्णसुवगतिःसुयानिश्चसुलोचना। ७९। रमानुगासुरासेवा  
 गुरुरसंधातयासुगा। ८०। सुवर्तित्राक्षिप्रसुस्तनीस्वनवसला। ८१। स्वजालरजोयुक्ता  
 रजिकारगमालिका। ८२। रक्तत्रियासुरकावरतिरगस्वरूपिणी। ८३। राजशुक्रान्वितानिष्ठा  
 सेतुवस्त्रारतिस्फुहा। ८४। वक्रावाकामकेलीसर्वस्वसुरजीविका। समाधिदुसुमानंद  
 स्वयंभूतिंदकांतिका। ८५। स्वयंभूस्फुल्लिपुटीरत्निसर्वस्वपेटिका। तुलिकायैत्रतिल  
 मायोगपीठाधिवाहिनी। ८६। सुलक्ष्णारम्यरूपासर्वलक्षणलक्षिता। नानालंकार  
 जगापवकामशरादिता। ८७। सुध्रीत्रिकोणयंत्रस्फुल्लालोकामेश्वरीतथा। ८८।

कुलाध्यक्षालम्बादेवसरस्वती। ८९। वसंतसयाप्रीताप्रीतिःकुवनरानता। कलाधरमुखाधुक्। ९०।  
 धरकलावती। ९१। पुष्टाप्रियाधृतिश्चैवरतिःप्रीतिर्मनोरमा। मनसोमोदिनीवैवमोदिनीदीपिनी। ९२।  
 कला। ९३। शोचिलीवशिम्भनीरजित्यसंतसुजगतया। हृष्यादिशावसुमनारतिःप्रीतिर्धृ  
 तिसुधा। ९४। हृदिःसोम्यारीचिवअंशुमालांगिरतथा। रादिनीवैवसुछायासंसृष्टमिंदुलोद  
 या। ९५। तुळीयामृतमूर्णयजगयंत्रनिवाहिनी। लिंगयंत्रालयाशंभुरुपासंयोजिनी। ९६। गरी  
 द्राविलीबीजरूपायअनुष्ठाशाशंकरप्रिया। रजोबीजमयीराजासुखदावांबितप्रदा। ९७।  
 राश्रीवीर्यशक्तिश्चक्रविद्धिवरूपिणी। सर्वज्ञात्तीक्ष्णामरस्याशिवशक्तिमयीप्रजा। ९८।  
 संयोगानंदनिलयासंयोगोत्पत्तिमाहका। संयोगकुंकुमानंदसंयोगयोगपदनि। ९९।  
 संयोगवसुखावस्त्वविदानंदाधरिदिता। अर्घ्यसुजकमंपत्तिरर्धराक्षिस्वरूपिणी। १००।  
 सामरस्यपराप्रीताप्रियसंगमरंजिणी। ज्ञानद्वतीज्ञानगम्याज्ञानयोनि। १०१।  
 धिकलाज्ञानसकलासकलासंकुलात्मविता। कलाबुद्धयीपद्माद्यतिः। १०२।  
 त्तिका। १०३। हंसकेलीस्कुलीखलाहंसद्वयविकाशिनी। वारागतामोकनाय  
 लावती। १०४। विद्याकलांतरालसुखावदुष्टयकलावती। विद्यासंतोषिलहसिः। १०५।  
 शिता। १०६। परमात्मापरावत्कलीनाशक्तियुष्टयीशांतिबोधकलीवासिःपराशक्ति  
 त्मकला। १०७। पश्यंतीपरमात्मानमंशुलकलातथा। पश्यंतीपरमात्मानमंशुलकलातथा। १०८।



विमोदिनी १२४। रमोक्षा सा हूँ परमाश्रिता तथा। ज्ञात्वादिष्टं तायेति १२५। य  
 कां ताशां तादांत गतिर्वेदां तां दाम ॥ १२६। वीरभा वमदादिमा वीरपां वारभा वदा ॥ १२७।  
 वानुमवा गीति वीरगंगमहाद्या। भूवि सिंकारा जश्रीः ॥ १२८। त्रियोत्तममातृका ॥ १२९। शश्वरि  
 स कुशलाशो नारं स्त्रु युद्धा चिका। विजया योगिनी यो ना परसे न्य विमोदिनी ॥ १३०। य  
 त्त वित्तगीति विनसं य यमालिनी। नो गुगार स्फितार लार लक्ष्म्य धि वासिता ॥ १३१। य  
 ज-मो ग्या व गलिका गल जोग नृत्त। क रिली कउ वा यो यो मल्ले ये ना पदा त्तिका ॥ १३२। ये  
 ली शो यद तापता का धुज वासिनी। स्व ह्म न्ना मर ये म्या यु वराज विव दिनी ॥ १३३। म  
 स्व संजा वा प्रजापाल न सद्रतिः। सुरभी सज न परराज कार्य पशयला ॥ १३४। अ  
 सोम मूर्त्तम क तदा स्फिति। पो र हि स प्रिया मा धी बाल ली य रुतं तति ॥ १३५। मो म पान न  
 श्री ता योज ना ध्य य न ह मो। प्रतिग्रह प रा दाम स र्वा जाति से तां ग ति ॥ १३६। गायत्री वेद  
 ध्ये मा धा शा सं ध्ये प स र्पिली। रत्ना नां द धि ति बा ला वा य न वे श जी विका ॥ १३७। क  
 उप नृ ति वृ द्धि धी श्व कु सी दे का। कु ला ध रा सु प्र सा दाम नो त्मा द प रा य ला ॥ १३८। क  
 गतिः कर्म करी को कु क रु जि का। ना ना वि या र द ह रा बा ल स्त्री श्री क ला मयी ॥ १३९। मु  
 पा रा स व शि शु र्ग मो वि नी। दु ग रि विं ध्या व न स्त्रु व कं म द र्प नि मू दिनी ॥ १४०। न  
 फार ता रा ध्या र मो क्ष सा। त्रि वि धो सा त रा म नी स म स्त मू र्से व धिः ॥ १४१। पं  
 श्रीः प्र बो धो घा न वं जि का। सु सि द्धा सि धि स दो हा यो गि नी द द व दि ता ॥ १४२। नि  
 रव

पाव का मे शी ज ग मा लि नी। नि त्या क्ति न्ना व ने रं रा व क्रि मं ड ल वा सि नी ॥ १४३। म  
 शि व हू नी ति वि श्रु ता। त्व रि ता प्र ष्ठि ता र्था वा वि र्था वा कु ल सुं द री ॥ १४४। नि  
 ज या स र्ब मं ग ला। ज्वा ना मा ना वि वि त्रा व म हा त्रि पु र सुं द री ॥ १४५। प  
 नं द ना पि नी। शि वा नं द ना थ रू पा श क्त्वा नं द स्व रू पि ली ॥ १४६। दे  
 पि नी। श्रु क्ता दे व्या नं द ना था कु ले शानं द ना पि नी ॥ १४७। का  
 दि यो धा गु रु रू पा व जोगा घा नं द ना पि नी ॥ १४८। क्ति  
 ना थ मयी स रू जा नं द ना पि नी ॥ १४९। सि  
 नं द क ना पि नी ॥ १५०। नृ व ना नं धा ली ना घा नं द ना थ ना पि नी। वि  
 ना पि नी ॥ १५१। स्वा त्मा नं द ना थ रू पा प्रि या घा नं द ना पि नी। मा  
 प र गु रू य गुरोः शक्तिः स्व गुरोः की र्त न प्रि या। त्रै ना क्य मो ह ना  
 र्ब सें तो जिली वृ त्ता मे शी व त्र या ल या। स र्व मो ना थ दा र्था व स  
 र ता क रा र्था व द रि ता मा य दे व ता। म ध्य रू क्ति निल या पा  
 रु ता वा सा को बे रा मा य दे व ता। विं डु व क रु ता वा स  
 पा श क्ति त्र या लिका। स र्व सा प्रा य ल स्त्री थ प व ल सी ति वि  
 नि क ल शां न दी। मा र का पं द री श्री वि धा त्व रि ता त  
 व बा ला या। पे व क ल्ये त ता य श्री वि धा मृ त पी न या ॥ १५२। सु



धुक्का विधा विरल व तंगी बुवने की ॥ १२८ ॥ वाराही पंवर ॥ गामी मारी नि ॥ १२९ ॥  
 तिकाश रूप ॥ १३० ॥ वी वदश नि ॥ १३१ ॥ प रितस्व निताश किर्द नि ॥ १३२ ॥  
 वशि वदश नि ॥ १३३ ॥ विष्णु दश नि ॥ १३४ ॥ पाव म हि वक्र नि ॥ १३५ ॥  
 क ताश या ॥ १३६ ॥ वी वदश नि ॥ १३७ ॥ पाव तया त्रि पुर सुंदरी ॥ १३८ ॥  
 स वी वदश नि ॥ १३९ ॥ म यी शी र्ध देव ता ॥ १४० ॥  
 स्विता वतुर स्वस्वा हार स्वा हार वा सिनी ॥ १४१ ॥  
 म हि ने शि ता पश्चिम हार देव ता ॥ १४२ ॥  
 स्विता बुक्ति रि क्ते ने र्ध वा सिनी ॥ १४३ ॥  
 थ री वै व क्रो मारी वै व वी तया ॥ १४४ ॥  
 पु श क र्धे आ द न कारिणी ॥ १४५ ॥  
 स्का का र्धे सि ॥ १४६ ॥  
 ॥ १४७ ॥  
 ॥ १४८ ॥  
 ॥ १४९ ॥  
 ॥ १५० ॥  
 ॥ १५१ ॥  
 ॥ १५२ ॥  
 ॥ १५३ ॥  
 ॥ १५४ ॥  
 ॥ १५५ ॥  
 ॥ १५६ ॥  
 ॥ १५७ ॥  
 ॥ १५८ ॥  
 ॥ १५९ ॥  
 ॥ १६० ॥  
 ॥ १६१ ॥  
 ॥ १६२ ॥  
 ॥ १६३ ॥  
 ॥ १६४ ॥  
 ॥ १६५ ॥  
 ॥ १६६ ॥  
 ॥ १६७ ॥  
 ॥ १६८ ॥  
 ॥ १६९ ॥  
 ॥ १७० ॥  
 ॥ १७१ ॥  
 ॥ १७२ ॥  
 ॥ १७३ ॥  
 ॥ १७४ ॥  
 ॥ १७५ ॥  
 ॥ १७६ ॥  
 ॥ १७७ ॥  
 ॥ १७८ ॥  
 ॥ १७९ ॥  
 ॥ १८० ॥  
 ॥ १८१ ॥  
 ॥ १८२ ॥  
 ॥ १८३ ॥  
 ॥ १८४ ॥  
 ॥ १८५ ॥  
 ॥ १८६ ॥  
 ॥ १८७ ॥  
 ॥ १८८ ॥  
 ॥ १८९ ॥  
 ॥ १९० ॥  
 ॥ १९१ ॥  
 ॥ १९२ ॥  
 ॥ १९३ ॥  
 ॥ १९४ ॥  
 ॥ १९५ ॥  
 ॥ १९६ ॥  
 ॥ १९७ ॥  
 ॥ १९८ ॥  
 ॥ १९९ ॥  
 ॥ २०० ॥

॥ २०१ ॥  
 ॥ २०२ ॥  
 ॥ २०३ ॥  
 ॥ २०४ ॥  
 ॥ २०५ ॥  
 ॥ २०६ ॥  
 ॥ २०७ ॥  
 ॥ २०८ ॥  
 ॥ २०९ ॥  
 ॥ २१० ॥  
 ॥ २११ ॥  
 ॥ २१२ ॥  
 ॥ २१३ ॥  
 ॥ २१४ ॥  
 ॥ २१५ ॥  
 ॥ २१६ ॥  
 ॥ २१७ ॥  
 ॥ २१८ ॥  
 ॥ २१९ ॥  
 ॥ २२० ॥  
 ॥ २२१ ॥  
 ॥ २२२ ॥  
 ॥ २२३ ॥  
 ॥ २२४ ॥  
 ॥ २२५ ॥  
 ॥ २२६ ॥  
 ॥ २२७ ॥  
 ॥ २२८ ॥  
 ॥ २२९ ॥  
 ॥ २३० ॥  
 ॥ २३१ ॥  
 ॥ २३२ ॥  
 ॥ २३३ ॥  
 ॥ २३४ ॥  
 ॥ २३५ ॥  
 ॥ २३६ ॥  
 ॥ २३७ ॥  
 ॥ २३८ ॥  
 ॥ २३९ ॥  
 ॥ २४० ॥  
 ॥ २४१ ॥  
 ॥ २४२ ॥  
 ॥ २४३ ॥  
 ॥ २४४ ॥  
 ॥ २४५ ॥  
 ॥ २४६ ॥  
 ॥ २४७ ॥  
 ॥ २४८ ॥  
 ॥ २४९ ॥  
 ॥ २५० ॥  
 ॥ २५१ ॥  
 ॥ २५२ ॥  
 ॥ २५३ ॥  
 ॥ २५४ ॥  
 ॥ २५५ ॥  
 ॥ २५६ ॥  
 ॥ २५७ ॥  
 ॥ २५८ ॥  
 ॥ २५९ ॥  
 ॥ २६० ॥  
 ॥ २६१ ॥  
 ॥ २६२ ॥  
 ॥ २६३ ॥  
 ॥ २६४ ॥  
 ॥ २६५ ॥  
 ॥ २६६ ॥  
 ॥ २६७ ॥  
 ॥ २६८ ॥  
 ॥ २६९ ॥  
 ॥ २७० ॥  
 ॥ २७१ ॥  
 ॥ २७२ ॥  
 ॥ २७३ ॥  
 ॥ २७४ ॥  
 ॥ २७५ ॥  
 ॥ २७६ ॥  
 ॥ २७७ ॥  
 ॥ २७८ ॥  
 ॥ २७९ ॥  
 ॥ २८० ॥  
 ॥ २८१ ॥  
 ॥ २८२ ॥  
 ॥ २८३ ॥  
 ॥ २८४ ॥  
 ॥ २८५ ॥  
 ॥ २८६ ॥  
 ॥ २८७ ॥  
 ॥ २८८ ॥  
 ॥ २८९ ॥  
 ॥ २९० ॥  
 ॥ २९१ ॥  
 ॥ २९२ ॥  
 ॥ २९३ ॥  
 ॥ २९४ ॥  
 ॥ २९५ ॥  
 ॥ २९६ ॥  
 ॥ २९७ ॥  
 ॥ २९८ ॥  
 ॥ २९९ ॥  
 ॥ ३०० ॥



विष्णो १५३। कामेशी कृष्णकिरगि वक्र कृत लया। कामगोप्यधिदेव रत्रि कोणव क्रोणग  
 एत क्रोणेश्वरी १५४। जंधरी लया। स्वयं वक्रा लया कृष्णकि वमिं ग क्रोणग १५४।  
 मव क्रोणेश्वरी १५५। नंदमदेशी वविं दुगाति रहस्य नृत्त। परब्रह्मस्वरूपा वम हात्रि पुर सुंदरी १५६। सव  
 रस्वा वसु मस्त वक्र नायका। सर्व वक्रेश्वरी सर्व मन्त्राणां मीश्वरी तथा १५७। सर्व विघ्नेश्वरी  
 वसव वीरगोश्वरी तथा। सर्व योगेश्वरी वैवर्षा नेश्वरी शिवेश्वरी १५८। सर्व कामेश्वरी स्वसव  
 तत्त्वेश्वरी गमेश्वरी। शक्तिः शक्ति धृष्टु काशानि बाधा दैत गजिली १५९। निप्रपं वाम हागाया  
 संप्रपं वामु वामिनी। सर्व विश्वोत्पत्ति धात्री परमानंद सुंदरी १६०। इत्येतत्कथितं दिव्यं  
 परमात्रं द्वा रिली। लावण्य सिंधु लहरी बालापंत्रौ घमदिर १६१। सहस्रनामतं त्राणोसा  
 रमा कृष्ण वावती। अपने नैस्तव ते नित्यमर्द्धरात्रे निशा मुखे १६२। प्रातः काले वक्ष्यायां सर्वकाल  
 मतप्रिये। सर्वमात्राण्यसुखदा बाला वृपरितुष्यति १६३। रत्नानि विविधान्यस्य विज्ञाति प्रभुरा  
 लिवा। मनोरथरथस्का निहदा निपश्येश्वरी १६४। पुत्रपौत्रैश्च वर्द्धते संततिः सर्वकामुद्धरी॥  
 शत्रवस्तस्य नश्यति वर्द्धते स्य बलानि वा १६५। व्याधयस्तस्य हूरस्तः सकलान्येव धानि च।  
 मंदिराणि विवित्राणि राजंते तस्य मवदा १६६। कृषिः कृत्तवनी तस्य भूमिः कामधुगव्यमा ॥६७॥  
 राजनपदास्तस्य राजंते तस्य निरात्रिगं १६७। भक्तगोपांति लोका वहेत्स्ववंते मरुदा जि। हारतस्य  
 विराजंते पुष्पाणि सुखं गमाः १६८। प्रजास्तस्य विराजंते निविवादाश्च मंत्रिणः। भक्तान् तस्य स्त  
 नुष्यंति शीलं तस्या तिसुंदरं १६९। लक्ष्मीस्तस्य वक्रे ह्वा सिंहा रतस्य मनोरमा। गणपधमया

[illegible]



न ते ॥ १५ ॥ तत्राहं वसेजिसं वरे हि कमला तथा । वसामस्तत्र तीर्थीनामुत्पत्तिस्तु जायते ॥  
 धां वां हृदये कृत्वा पठेद्देसाधको तमः । ध्याना नंदकलायोगादेकादशमिदं ॥ १६ ॥  
 स्तोत्रेणानेन वा देवी तव पूजा प्रलंबवेत् । षोडश्यास्तु नृत्वा पठितं यमयत्नतः ॥ १७ ॥  
 उत्तमा सर्वतंत्राणां बाजायाः पूजनं स्मृतिः । तत्रोत्तमाधो दुशाणातिनेयं स्तोत्रं मुत्तमं ॥  
 नासाध्यायप्रदातव्यमश्रद्धायशठाय च । नक्तिहीनायमग्निनेगुरुनिदापरामर्शः ॥  
 अलसा पाप्रमत्ता यशिवान्तायमुंदरि । विष्णुनेक्तिविहीनायमलप्य लघुबुद्धेः ॥ १८ ॥  
 यौ दिव्यं नक्ति करं मुक्तं कारणं नक्तिवदं । जतायोगे पठेच्छक्तस्तोत्रमेतद्वरातनः ॥ १९ ॥  
 सैव कल्पजता तस्य बांछा फलकरी तथा । पुष्पिताश्चेतसृग्गांधाकुंडमा लोकाध्यायकः ॥ २० ॥  
 अतुष्टः पठते यस्तु शतमरुत्पुण्यभाक् । विकल्पे सिद्धिर्हतिः स्यान्न विविक्त्ये स्व  
 यं शिवाः ॥ २० ॥ नमः काश्यपशिष्या यज्ञये न्यश्चेकदायुन । प्रकाशे दुःखहेतुश्च गुप्तेषु  
 दिग्गोदयाः ॥ २० ॥ अनेकजन्मपुण्येन हीनो जायते नरः । तत्रैवानेकपुण्येनैवैशक्तिना वप्रजायते । महोदयेन  
 क्लिप्तं स्तोत्रं जायते ॥ २० ॥ तत्रैवानेकपुण्येनैवैशक्तिना वप्रजायते । महोदयेन  
 तत्रादिवा ज्ञेया जावभाषावेत् ॥ २० ॥ तत्रादिवा तुरीयाख्याना गैरंताः श्रिता नवे  
 त् । नाममं कीर्तनं तस्यास्तत्राप्यति दुर्लभं ॥ २० ॥ अत्र नमः निसानि सा प्रसन्नानाम

### शिष्य

कीर्तनात् । श्री बन्धुकिर्जवेत्तत्र कर्तव्यं नावतिष्ठते ॥ २० ॥ अबधूतत्वमेवास्मिन् वलाप्रिमक  
 ल्यना । अनादयोपि देवेशिष्यं यंति पदद्वयं ॥ २० ॥ हस्तं नक्तिना वं स्यात्प्रवस्था  
 ह्यव्यवस्थिताः स्वयं शिवः सविदेवोवा लाया जाव लंये ॥ २१ ॥ ब्रह्मानंदमयः प्रोक्तो  
 यदाशिवविधूयते । अनादयोपि देवेशिष्यं यंति पदद्वयं ॥ २१ ॥ अनादयोपि देवेशिष्यं यंति पदद्वयं ॥ २१ ॥  
 याध्यानाद्वा ज्ञेया नमः कीर्तनात् । सदानंदमया न्यायास्तदानंदं प्रजायते ॥ २२ ॥ एव  
 यः कुरुते नक्त्या सदानंदमोक्तं दायकः ॥ २२ ॥ ॥ इति कुरुयामजेनमामहे श्वरसंवा  
 देवा लायाः सहस्रनामस्तोत्रं संसृज्मि ॥ ॥ लेखकपाठकयोश्चिबमस्तु ॥ ॥ श्री ८ ॥ ॥  
 आश्विनाशितमतिपदिष्टगोशु कीर्तनात्मजश्री देवेनाश्वरीदी । आह देव कृष्णार्थं शुभं ॥



श्री गणेशाय नमः  
 मन्त्रेन प्राणायासः न संवेद  
 त्ति धाम्ने श्रीगुं मं निस्पृह निश  
 त्ति धाम्ने लज्जः शिं प्रनादिवा  
 ध्यात्ति धाम्ने मध्यमा बोस  
 तं च शक्ति धाम्ने प्रनामिका  
 यं प्रलुप्त शक्ति धाम्ने कि  
 यं प्रवर्त शक्ति धाम्ने करत  
 लक्ष्मी एवमेव इदमिह  
 धाम्ने उमा सहयं परमेश्वरं प्रभुं विलास  
 सर्वगतं प्रशंतां ध्यात्वा मुनिर्गच्छति  
 ततः को निःसमस्त साहित्यमसः परमात्मा  
 गंध पुष्पादि मानसोपचारैः संहर  
 ज्ञापमाजयाय ध्याशक्ति  
 वात्सल्यपसमासेन ध्याति  
 समर्पणं ॥



श्रीग

श्रीगणेशायनमः  
श्रीगणेशायनमः  
शिवशरणम्  
यानगानां हृदयकरः